ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

बकरियों में गर्भपात और निदान

डॉ. सोनवीर सिंह, डॉ. प्रत्यांशु श्रीवास्तव, डॉ. अमृता प्रियदर्शी, डॉ. जीतेंद्र कुमार अग्रवाल, एवं डॉ. अनुज कुमार

मादा पशु रोग विज्ञान विभाग, उ. प्र. पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गौ अनुसंधान संस्थान, मथुरा, उत्तर प्रदेश

भारत में छोटे, सीमांत और भूमिहीन किसानों के द्वारा बकरी पालन किया जाता है जो कि आय का एक अच्छा स्रोत है । बकरी पालन में ना केवल बड़े जानवरों की तुलना में कम लागत लगती है बल्कि बकरियाँ शुष्क जलवायु एवं कम चारे की उपलब्धता की दशा में भी जीवित रह सकती है । इसलिए बकरी को गरीबों की गाय भी कहा जाता है । 2019 की पशुगणना के अनुसार देश में बकरियों की आबादी 14.89 करोड़ है जो कि कुल पशुधन का 27.8% है और यह पिछली पशुगणना की तुलना में 10.14% की वृद्धि को दर्शाती है । (१९वीं पशुगणना, पुशपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार)। बकरियों से प्राप्त होने वाले उत्पादों (जैसे की दूध, मांस, खाल और बच्चे) का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में उपयोग की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । भारतीय पशुधन सकल घरेलू उत्पाद में बकरी पालन का योगदान 8.4 % है । प्राप्त उत्पादों की उपयोगिता के कारण बकरियों में प्रजनन प्रबंधन का महत्व और भी बढ़ जाता है । किसानों के द्वारा बकरियों का पालन अवैज्ञानिक तरीकों से करने तथा ज्ञान की कमी के कारण बकरीयों में उत्तम प्रजनन प्रबंधन नहीं हो पाता है जिससे गर्भपात की घटना होने की सम्भावना बढ़ जाती है । गर्भपात के कारण बकरीयों में विभिन्न तरह की प्रजनन संबंधित समस्या आती हैं जिस कारण से पशुपालको को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता हैं ।

बकरियों में गर्भपात विभिन्न कारकों के कारण हो सकता है, जिनमें संक्रामक रोग, पोषण संबंधी कमी, हार्मोनल असंतुलन और तनाव इत्यादि मुख्य रूप से शामिल हैं ।

1.**संक्रामक रोग**: कई संक्रामक कारक बकरियों में गर्भपात का कारण बन सकते हैं । जिनमे से कुछ महत्वपूर्ण निम्नवत् हैं-

क्लैमाइडियोसिस: यह जीवाणु संक्रमित बकरियों में देर से गर्भपात और मृत बच्चे के जन्म का कारण बनता है । प्रभावित जानवरों को स्वस्थ जानवर से अलग रखना और उपचार के साथ-साथ टीकाकरण से बीमारी को रोकने में मदद मिलती है ।

टोक्सोप्लाज्मोसिस: यह एक परजीवी जनित रोग है जो दूषित चारे या पानी के माध्यम से बकरियों को संक्रमित करता है । उचित स्वच्छता प्रबंधन, जैसे कि दूषित क्षेत्रों की नियमित साफ़- सफ़ाई, टोक्सोप्लाज़मोसिज़ से संबंधित गर्भपात को रोकने में मददगार होती हैं ।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

कैम्पिलोबैक्टीरियोसिस: एक जीवाणु जनित रोग है जो बकरियों में शीघ्र गर्भपात का कारण बन सकता है । संवेदनशील जानवरों का टीकाकरण और सख्त जैवसुरक्षा के उपाय इसके नियंत्रण में सहायता कर सकते हैं ।

ब्रुसेलोसिस: यह एक जीवाणु जनित रोग है जो बकरीयों में गर्भपात होने का मुख्य कारण है । यह बकरियों में चौथे महीने में गर्भपात करता है । इसमें दीर्घकालिक गर्भाशय घाव विकसित हो जाते हैं । वयस्कों में संक्रमण आजीवन रहता है ।

2.पोषण संबंधी कमियाँ

अपर्याप्त पोषण जैसे चारे में खनिज लवण एवं विटामिन की कमी के कारण गर्भवती बकरियों में गर्भपात हो सकता है । सेलेनियम, विटामिन ई और आयोडीन जैसे आवश्यक पोषक तत्वों की कमी बकरियों में गर्भपात से जुड़ी हुई है । संतुलित आहार बनाए रखने और गर्भवती बकरियों की ज़रूरतों के अनुरूप खनिज तत्वों जैसे- कैल्सियम फॉस्फोरस मैगनीशियम इत्यादि प्रदान करने से पोषण संबंधी गर्भपात को रोकने में मदद मिलती है ।

3.हार्मोनल असंतुलन

हार्मोनल असंतुलन, विशेष रूप से प्रोजेस्टेरोन के स्तर में गड़बड़ी, बकरियों में गर्भावस्था को बाधित कर सकती है । सामान्य कारणों में ल्यूटियल अपर्याप्तता, हार्मोनल उपचार, या प्रोस्टाग्लैंडीन का अनैतिक उपयोग शामिल है । शरीर में हार्मोन की स्थिति की पहचान एवं संबंधित प्रजनन प्रबंधन से गर्भपात को रोकने में सहायता हो सकती है ।

4.तनाव

अत्यधिक पर्यावरणीय परिस्थितियों, जैसे गर्मी का तनाव या अचानक हुए तापमान परिवर्तन इत्यादि के कारण भी गर्भपात जैसी जटिलता हो सकती है । छोटे स्थान में अधिक पशुओं का रखाव, अचानक एवं अत्यधिक शोर, अचानक आहार परिवर्तन, लंबी दूरी की यात्रा दूसरे पशुओं से झगड़ा जैसे तनाव भी गर्भपात में योगदान कर सकते हैं । उचित वेंटिलेशन सुनिश्चित करना, उपयुक्त तापमान की स्थिति बनाए रखना और तनावमुक्त वातावरण प्रदान करना गर्भावस्था के नुकसान को कम करने के लिए आवश्यक है।

प्रबंधन रणनीतियाँ

बकरी गर्भपात को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए, निम्नलिखित रणनीतियों पर विचार किया जा सकता है-

1) पशु को जानकार एवं पंजीकृत पशुचिकित्सक की नियमित चिकित्सकीय निगरानी में रखना चाहिए । जिससे किसी भी अनियमित स्वास्थ्य की दशा में परेशानी को जल्द से जल्द पहचानकर उसका निवारण किया जा सके ।

2) बकरियों को गर्भपात का कारण बनने वाली संक्रामक बीमारियों से बचाने के लिए उचित समय पर टीकाकरण कराना चाहिए ।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

3) गर्भित पशु को संतुलित आहार प्रदान करना चाहिए जो पोषण संबंधी समस्त आवश्यकताओं को पूरा करता है, जिसमें खनिज और विटामिन पर्याप्त मात्रा में शामिल हों । चारे की गुणवत्ता का नियमित मूल्यांकन करें और पूरक आहार की आवश्यकता को समझें । खनिज मिश्रण की उपलब्धता के लिए पशुचिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए । नियमित रूप से उपयुक्त क्रमीनाशक औषधियों का उपयोग करना चाहिए ।

4) संक्रामक रोगों की शुरूआत और उनके प्रसार को रोकने के लिए सख्त जैवसुरक्षा प्रोटोकॉल लागू करें। नए जानवरों को अलग करें, स्वच्छता मानकों को बनाए रखें और फार्म पर लोगों, वाहनों और उपकरणों की आवाजाही को नियंत्रित करें । किसी भी तरह के रोग के लक्षण दिखने पर तुरंत ही पशुचिकित्सक से परामर्श तथा उचित इलाज करवाना चाहिए।

5) उचित आवासीय प्रबंधन, वायु युक्त वातावरण, और आरामदायक तापमान सुनिश्चित करके बकरी के वातावरण में तनाव को कम करें । ख़राब एवं अपर्याप्त आहार, अनुचित रख-रखाव, या चारे में अचानक बदलाव, लंबी यात्रा इत्यादि तनाव पैदा करने वाले करको से गर्भित पशु को बचाना चाहिए।

बकरी के गर्भपात से पशु कल्याण और बकरी पालन की आर्थिक महत्ता दोनों पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है । विभिन्न कारणों को समझ कर और प्रभावी वैज्ञानिक प्रबंधन रणनीतियों को लागू करके, किसान बकरियों में गर्भपात की घटनाओं को काफी कम कर सकते हैं । उचित पोषण बनाए रखना, संक्रामक रोगों का प्रबंधन करना, हार्मोनल प्रोफाइल की निगरानी करना और तनाव मुक्त वातावरण बनाना, बकरियों में स्वस्थ बच्चों के उत्पादन को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं । छोटे और भूमिहीन किसानों के लिए जो छोटे या बड़े स्तर पर बकरी पालन करते है, ये प्रबंधन रणनीतियाँ अत्यधिक कारगर साबित हो सकती है जिससे वे कम से कम नुक़सान के साथ अधिक से अधिक लाभ कमा सकते है ।